

सं. श्रो.बि./हिसार/65-85/45579.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय हैं कि मै० (1) आयुक्त, हरियाणा राज्य परिवहन, विकार, के अभिक श्रो सुभाग चन्द्र तथा उत्तरे प्रवन्धकों के बोव इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को त्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उप धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियागा के राज्यमान इस हे द्वारा सरकारी अधिम् वता सं 9641-1-अव / 78/32573, दिनांक 6 नवस्बर, 1970 के साथपिठत सरकारी अधिम् वता की धारा 7 के अधीन गठित अस त्यायानय, रोहतक, को विकाद प्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे निवा मामना त्यायिनिर्णय एवं पंचाद तीन मास में देने हें गु निर्दिण्ड करते हैं जो कि उक्त प्रवन्ध हो तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामना है या उक्त विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामना है :--

क्या श्री सुभाष चन्द्र की सेवाम्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? सं. भ्रो.वि./यमुना/46-85/45587.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. के ० सी० टैक्सटाईल मिल, जीन्द, के श्रीमक श्री रोहताश सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है; भ्रौर चिक हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायिशिय हेत् निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं:

इसलिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सें. 3(44)84-3-अम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, अम्बाला, को विवाद प्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्देश करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रिमिक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या उससे सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री रोहताश सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित रिथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

संब्योबिन रोहतक/82-85/45594---वृकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैंब (1) परिवहन ग्रायुक्त, हरियाणा, चण्डीगढ़, (2) जनरन मैनेजर, हरियाणा रोडवेज, रोहतक, के श्रीमिक श्री रमेश कुमार स्वीपर तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके ब्राव लिखित मामले में कोई श्रीबोगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 9641-1-अम78-32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ प्रठित सरकारी अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतंक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री रमेण कुमार स्वीपर की सैवायों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

दिनांक 13 नवम्बर, 1985

. सं. ग्रो. वि./जी जी जि. प्त । 96-85/45852. चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै. निन्नो लिं., दिल्ली रोड़, गुड़गांव, के श्रमिक श्री राम चन्द्र तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में शोई ग्रौद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद की न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रब, ग्रौव्योगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947; की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रधिसूचना सं. 5415-3-श्रम- 68/ 15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुए ग्रधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त ग्रधिनियम की धारा- 7 के ग्रजीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों सथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबन्धित मामला है:—

क्या श्री राम चन्द्र की सेवाग्रों का संमापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?